2. अतृप्त-कामना

(कहानी)

यह कहानी एक परिश्रमी एवं कर्तव्यनिष्ठ माँ के हृदय की वेदना को रेखांकित करती है। उसकी कामना थी कि उसका बेटा सच्चरित्र एवं उच्च अधिकारी बने, पर बेटे की काली करतूत के कारण उसकी कामना अतृप्त ही रह गई।

जोगलांबा प्रातःकाल अपने मालिक के घर पहुँच जाती। वहीं से काम की सूची लेकर खलिहान चली जाती। वह बड़ी लगन से धान औसाती। उसे कभी किसी ने कोई शिकायत करते नहीं देखा। वह कब खाती है, कब सोती है, यह भी बहुत कम लोगों को पता था उसके चेहरे पर न कभी किसी ने थकावट देखी और न परेशानी।

पर आज उसके चेहरे पर उदासी देख मालिक रघुराम का दिल कचोट उठा। मगर उसने जोगलांबा से इसका कारण पूछने का साहस नहीं किया।

जोगलांबा अपनी परेशानी को छिपाने का प्रयत्न करके भी छिपा नहीं पा रही थी। रह-रहकर उसकी आँखों से आँसू निकल आते। वह लोगों की आँख बचाकर आँचल से आँसू इस तरह पोंछ लेती, मानो उसकी आँखों में गिरी किरकिरी निकल रही हो।

करीब दोपहर के समय मालकिन अपने नाती की खोज में खलिहान में आई तो उसकी दृष्टि जोगलांबा पर पड़ी। उसे देखकर उसने पूछा- "अरी! बात क्या है? आज तुम मुझसे बात तक नहीं करती। क्या हुआ? लड़के का परीक्षाफल क्या हुआ?"

सहानुभूति की इन बातों को सुनने पर जोगलांबा का दिल उमड़ पड़ा। वह सजल नेत्रों से बोली- "माई! सब ठीक है। परेशानी की कोई बात नहीं।"

"छिपाने की कोशिश न करो। तुम्हारा चेहरा ही बता रहा है! न मालूम, तुम कब से रो रही हो। चलो, मेरे साथ घर चलो।"

Scanned with CamScanner

"नहीं, माई! मुझे आज शाम तक औसाने का काम पूरा करना है। कल तक सारा अनाज कुठलों में भरवा देना है।"

"तुम्हारे अकेले के जाने से काम थोड़े ही रुक जाएगा? चलो, चलें।" यों कहते हुए मालकिन जबरदस्ती जोगलांबा को अपने साथ ले गई।

मालकिन की सांत्वना पाकर जोगलांबा फूट पड़ी और बोली– "माई! आज सुबह उठकर मैंने देखा, तो मेरे आराध्य 'नटराज' की काँसे की मूर्ति गायब थी। वह मूर्ति मुझे मेरी सास दे गई थी। वह मुझे प्राणों से भी प्यारी थी। मैं प्रतिदिन उसकी पूजा करती थी। जब तक वह मेरे घर रही, मेरे मन में कोई चिंता या परेशानी नहीं रही। यही मेरी चिंता का कारण है। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि वह मूर्ति गायब कैसे हो गई? कल रात को सोने से पहले मैंने मूर्ति के सामने जाकर प्रणाम किया था। सुबह उठकर देखती हूँ तो नदारद है। मुझे डर लग रहा है कि कहीं भगवान मुझसे रुष्ट होकर चले न गए हों।

"अरी! तुम भी कैसी पागल हो। बड़े-बड़े पापियों के घरों में भगवान बंद हैं। उनके सारे दुष्कर्मों को वे जानते हैं, फिर भी वे उनके घरों को छोड़कर भागते नहीं। तुम तो भली हो। तुमने भगवान को रुष्ट करने वाला कोई काम थोड़े ही किया है? तुम्हारे घर के ही किसी आदमी ने उसे हड़प लिया होगा।"

"नहीं, मालकिन! यह नामुमकिन है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरे पति नटराज के बड़े भक्त हैं। मेरा लड़का पढ़ा-लिखा है। क्या वह ऐसा कर सकता है?"

"क्यों नहीं? पढ़ाई के साथ उसका क्या संबंध है? जिसके दिल में चोर बैठा हुआ है, वह चोरी करेगा ही। आज के जमाने में यह समझना मुश्किल है कि कौन चोर है और कौन साधु।"

"नहीं, मालकिन! मेरा लड़का चोर नहीं हो सकता। कभी नहीं। वह उसी मूर्ति का बेटा है। क्या वह अपने बाप की चोरी करेगा?"

"अरी! तुम भी कैसी पागल हो। आज के ज़माने में लोग अपने बाप तक की हत्या कर डालते हैं। मूर्ति की चोरी कौन-सी बड़ी बात है?"

मालकिन के मुँह से ये शब्द सुनने पर जोगलांबा का दिल काँप उठा। वह सोचने लगी कि सुबह जब वह काम पर निकली थी तो बेटा गणेश घर से गायब था। वह मुझसे कहे बिना कभी नहीं जाता था। पति कल से थोड़े अस्वस्थ थे और खाट पर पड़े हुए थे। रात को घर पर कोई नहीं आया। फिर भगवान की मूर्ति कैसे गायब हो सकती है? क्या उसका लड़का भगवान की मूर्ति चुराएगा? वह भगवान का पुत्र ही तो है।

"मैं सदैव भगवान से यही कामना करती थी कि वह मेरे लड़के को सुबुद्धि दे, उसे शिक्षित और सुयोग्य बनाए। क्या मेरी कामना अतृप्त रह जाएगी? ऐसा कभी नहीं हो सकता है। भगवान बड़े ही कृपालु हैं। वे सबकी सुनते हैं। क्या मेरी न सुनेंगे?"

Scanned with CamScanner

इधर कुछ दिनों से आस-पास के गाँवों के मंदिरों की प्राचीन मूर्तियाँ गायब हो रही थीं। जाँच के सिलसिले में पुलिस का एक सिपाही भी गाँव में आया था। गाँव के पटेल रघुराम ने उसे यह समझाकर वापस भेज दिया कि हमारे गाँव में देवता की मूर्तियों को चुराने वाला व्यक्ति आज तक न पैदा हुआ है, न पैदा होगा। हम मंदिरों के दरवाज़ों पर ताले तक नहीं लगाते। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो भगवान तक को बेचने को तैयार हो जाएगा।

एक सप्ताह बीत गया। पटेल रघुराम कर वसूली के लिए चौपाल में बैठा था कि पुलिस ने तीन बंदियों को लाकर उसके सामने खड़ा कर दिया। उनमें एक रघुराम का बेटा था, दूसरा जोगलांबा का बेटा और तीसरा पुलिस का एक सिपाही, जो एक हफ्ते पहले ही तहकीकात के लिए उस गाँव में आया था। उनके साथ एक पुलिस इंस्पेक्टर और पाँच-छह सिपाही भी थे।

उन तीनों ने मिलकर पिछली रात को गाँव की कुछ मूर्तियों की चोरी की थी। एक ट्रक में ले जाते हुए वे पकड़े गए थे। अपने पुत्र को बंदी के रूप में पाकर पटेल रघुराम का सिर झुक गया। पुलिस इंस्पेक्टर कह रहा था– "पटेल साहब! देखिए, आपका लड़का शिक्षित है, संपन्न परिवार का है, धर्म को मानता है, फिर भी धन के लोभ में पड़कर वह विदेशी एजेंसी के हाथ अपने ही देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बेच रहा था।" इंस्पेक्टर के मुँह से यह बात सुनने पर रघुराम को लगा, मानो उसके कलेजे में छुरी भोंक दी गई हो। उसने कहा–"महाशय! धर्म-द्रोहियों को किसी भी हालत में क्षमा नहीं किया जा सकता। अब मैं सिर उठाकर इस गाँव में चल भी नहीं सकता। इस कलंक को धोने का एक ही उपाय है कि मेरे बेटे को कड़े से कड़ा दंड दिया जाए।"

इंस्पेक्टर उन बंदियों को लेकर चला गया। रघुराम दुखी मन से घर लौटा। जोगलांबा को पहले ही इस बात की खबर लग चुकी थी। वह अपने मालिक के घर पर उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। मालिक के मुँह से सारी बातें सुनकर जोगलांबा रुद्ध कंठ से बोली–

"मालिक! मैं ऐसे बेटे का चेहरा तक नहीं देखना चाहती। मैं अपने बेटे को चरित्रवान और उच्च अधिकारी के रूप में देखना चाहती थी। मेरी यह कामना अतृप्त रह गई। इसी बात का मुझे दुख है।"

यह कहते-कहते वह फूट-फूटकर रोने लगी।

–बाल शौरि रे

Scanned with CamScanner